

सखि धर्म

चर्चा में क्यों?

वर्ष 2019 सखि धर्म के संस्थापक गुरु नानक देव जी का 550वाँ जयंती वर्ष है। इनका जन्म स्थल पाकस्तान स्थिति श्री ननकाना साहबि है।

- इस अवसर पर करतारपुर साहबि गलियारे का उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पाकस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान द्वारा किया गया जो भारत के पंजाब में अवस्थित डेरा बाबा नानक गुरुद्वारा को पाकस्तान के नरोवाल ज़िले में अवस्थित दरबार साहबि से जोड़ता है।

परिचय

- पंजाबी भाषा में 'सखि' शब्द का अर्थ 'शषिय' होता है। सखि ईश्वर के वे शषिय हैं जो दस सखि गुरुओं के लेखन और शकिषाओं का पालन करते हैं।
- सखि एक ईश्वर में वशिवास करते हैं। उनका मानना है कि उन्हें अपने प्रत्येक काम में ईश्वर को याद करना चाहिये। इसे समिरन (सुमरिण) कहा जाता है।
- वशि्व भर में 25 मलियन से अधिक सखि आबादी है जनिमें से अधिकांश भारतीय राज्य पंजाब में नविस करते हैं।
- सखि अपने पंथ को गुरुमत (गुरु का मार्ग- The Way of the Guru) कहते हैं। सखि परंपरा के अनुसार, सखि धर्म की स्थापना गुरु नानक (1469-1539) द्वारा की गई थी और बाद में नौ अन्य गुरुओं ने इसका नेतृत्व किया।
- सखि मानते हैं कि सभी 10 मानव गुरुओं में एक ही आत्मा का वास था। 10वें गुरु गोबदि सहि (1666-1708) की मृत्यु के बाद अनंत गुरु की आत्मा ने स्वयं को सखि धर्म के पवतिर ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहबि (जसि आदिग्रंथ भी कहा जाता है) में स्थानांतरित कर लिया और इसके उपरांत गुरु ग्रंथ साहबि को ही एकमात्र गुरु माना गया।
- पाँचवें गुरु, गुरु अरजुन देव के समय तक सखि धर्म स्थापति हो चुका था। गुरु अरजुन देव ने अमृतसर को सखिों की राजधानी के रूप में स्थापति किया और सखि पवतिर लेखों की पहली प्रमाणिक पुस्तक के रूप में आदिग्रंथ का संकलन किया।

दर्शन और मत:

- एक ओंकार – अर्थात् ईश्वर एक है और सभी धर्मों के सभी लोगों के लिये वही एक ईश्वर है।
- आत्मा मानव रूप को प्राप्त करने से पहले ज़रा और मरण के चक्र से गुज़रती है। हमारे जीवन का लक्ष्य एक अनुकरणीय अस्तित्व का नरिवहन करना है ताकि ईश्वर के साथ समागम हो सके।
- सखिों को हर समय ईश्वर का सुमरिण करना चाहिये और अपने आध्यात्मिक एवं लौकिक दायित्वों के बीच संतुलन बनाए रखते हुए सदाचारी एवं सत्यनिष्ठ जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिये।
- मोक्ष प्राप्त करने और ईश्वर के साथ समागम करने का सच्चा मार्ग संसार से वरिक्त या ब्रह्मचर्य के पालन में नहीं है बल्कि एक गृहस्थ का जीवन जीने, ईमानदारी से आजीविका कमाने और सांसारिक प्रलोभनों एवं पापों से बचने में है।
- सखि धर्म उपवास, तीर्थ यात्रा, अंधवशिवासों का पालन, मृतकों की पूजा, मूर्तापूजा जैसे अनुष्ठानों की नदि करता है।
- सखि धर्म का उपदेश है कि विभिन्न नसल, धर्म या लिंग के लोग ईश्वर की दृष्टि में एक समान हैं। यह पुरुषों और महिलाओं में समानता की शकिषा देता है। सखि महिलाएँ किसी भी धार्मिक समारोह में भाग ले सकती हैं या कोई भी अनुष्ठान कर सकती हैं या प्रार्थना में मंडली का नेतृत्व कर सकती हैं।

इतिहास और धार्मिक आचरण:

- गुरु नानक जी ने प्रेम और ज्ञान का संदेश दिया तथा हद्वि एवं मुस्लिम धर्म में व्याप्त कुरीतियों की नदि की। इस नए धर्म का प्रबुद्ध नेतृत्व गुरु नानक से लेकर गुरु गोबदि सहि तक दस गुरुओं ने किया।
- प्रभाव: सखि धर्म का उद्भव एवं प्रसार भक्ति आंदोलन और हद्वि धर्म के वैषणव मत से प्रभावित था। हालाँकि सखि धर्म केवल भक्ति आंदोलन का ही वसितार नहीं था। सखि धर्म का प्रसार तब हुआ जब इस कषेत्र पर मुगल साम्राज्य का शासन था। दो सखि गुरुओं गुरु अरजुन देव और गुरु तेग बहादुर द्वारा इस्लामिक धर्मांतरण से मना करने पर मुगल शासकों द्वारा उन्हें प्रताड़ित किया गया और मार डाला गया। इस्लामिक युग में सखिों के उत्पीड़न ने खालसा की स्थापना को प्रेरित किया जो अंतरात्मा और धर्म की स्वतंत्रता का पंथ है।
- अंतमि गुरु, गुरु गोबदि सहि ने खालसा (जसिका अर्थ है 'शुद्ध') पंथ की स्थापना की जो सैनिक-संतों का वशिषिट समूह था। खालसा प्रतबिद्धता, समर्पण और सामाजिक चेतना के सर्वोच्च सखि गुणों को उजागर करता है।
- खालसा ऐसे पुरुष और महिलाएँ हैं जिन्होंने सखि बपतसिमा समारोह में भाग लिया हो और जो सखि आचार संहिता एवं परंपराओं का सख्ती से पालन करते

हैं तथा पंथ के पाँच नरिधारति भौतिक वस्तुओं - केश, कंघा, कड़ा, कच्छा और कृपाण धारण करते हैं।

- सखि धर्म में पुजारी या पुरोहित वर्ग नहीं होता है, इस प्रथा को गुरु गोबदि सहि ने समाप्त कर दिया था। गुरु गोबदि सहि मानते थे कि पुरोहित वर्ग भ्रष्ट एवं अहंकारी होता है।
- सखि धर्म में केवल गुरु ग्रंथ साहबि का एक संरक्षक होता है जिसे 'ग्रंथी' कहते हैं और कोई भी सखि गुरुद्वारा में या अपने घर में गुरु ग्रंथ साहबि के पाठ के लिये स्वतंत्र है। सभी धर्मों के लोग गुरुद्वारा जा सकते हैं। प्रायः प्रत्येक गुरुद्वारे में एक नःशुलक सामुदायिक रसोई होती है जहाँ सभी धर्मों के लोगों को भोजन परोसा जाता है। गुरु नानक ने पहली बार इस संस्था की शुरुआत की थी जो सखि धर्म के मूल सिद्धांतों सेवा, वनिम्रता और समानता को रेखांकित करती है।
- **चार अनुष्ठान:** सखियों के कर्तव्यों को नरिदष्टि करने वाली पुस्तिका "**सखि रहत मर्यादा**" चार अनुष्ठानों का प्रावधान करती है जिन्हें संस्कार मार्ग कहा जाता है।

1. पहला अनुष्ठान जन्म और गुरुद्वारे में आयोजित नामकरण समारोह है।
2. दूसरा अनुष्ठान आनंद करज (आनंदमय मलिन) या वविह समारोह है।
3. तीसरा अनुष्ठान जिसे सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है, अमृत संस्कार है जो खालसा में दीक्षा के लिये होने वाला समारोह है।
4. चौथा अनुष्ठान मृत्योपरांत होने वाला अंतमि संस्कार समारोह है।

- तीन कर्तव्य जनिका पालन सखियों द्वारा कथिा जाना चाहिये - प्रार्थना, कृत्य या कार्य और दान।

1. **नाम जपना:** हमेशा ईश्वर का सुमरिन करना।
2. **कीरत करना:** ईमानदारी से आजीविका अर्जति करना। चूँकि ईश्वर सत्य है, एक सखि ईमानदारी से जीवन जीना चाहता है। इसका अर्थ केवल अपराध से दूर रहना नहीं है बल्कि जुए, भीख, शराब व तंबाकू उद्योग में काम करने से भी बचना है।
3. **वंड छकना:** शाब्दिक रूप से इसका अर्थ है दूसरों के साथ अपनी कमाई साझा करना अर्थात् दूसरों को दान देना और उनकी देखभाल करना।

- **पाँच दोष:** सखि उन पाँच दोषों से बचने की कोशिश करते हैं जो लोगों को आत्म-केंद्रित बनाते हैं और उनके जीवन के ईश्वरीय मार्ग में बाधाएँ पैदा करते हैं। ये हैं: काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार।

सखि धर्म के दस गुरु:

दस सखि गुरु – परंपरा तालिका		
पहले गुरु	गुरु नानक	1469-1539
दूसरे गुरु	गुरु अंगद	1539-1552
तीसरे गुरु	गुरु अमर दास	1552-1574
चौथे गुरु	गुरु राम दास	1574-1581
पाँचवें गुरु	गुरु अर्जुन देव	1581-1606
छठे गुरु	गुरु हरगोबदि	1606-1644
सातवें गुरु	गुरु हर राय	1644-1661
आठवें गुरु	गुरु हरकशिन	1661-1664
नवें गुरु	गुरु तेग बहादुर	1665-1675
दसवें गुरु	गुरु गोबदि सहि	1675-1708

सखि धर्म के महत्त्वपूर्ण गुरुद्वारे:

- **पंज तख्त:** ये सखियों के पाँच तख्त हैं और ये तख्त पाँच गुरुद्वारे हैं जनिका सखि समुदाय के लिये बहुत महत्त्व है।

1. **अकाल तख्त साहबि** का अर्थ है अनंत सहिसन (Eternal Throne)। यह अमृतसर में स्वर्ण मंदिर परसिर का एक अंग है। इसकी नींव छठे सखि गुरु, गुरु हरगोबदि जी ने रखी थी।
2. **तख्त श्री केशगढ़ साहबि** आनंदपुर साहबि, पंजाब में स्थित है। यह खालसा का जन्म स्थल है जिसे वर्ष 1699 में गुरु गोबदि सहि जी ने स्थापित किया था।
3. **तख्त श्री दमदमा साहबि** भटडा के पास तलवंडी साबो ग्राम में स्थित है। गुरु गोबदि सहि जी लगभग एक वर्ष तक यहाँ रहे और उन्होंने वर्ष 1705 में गुरु ग्रंथ साहबि के अंतमि संस्करण को संकलित किया था जिसे 'दमदमा साहबि बीर' के नाम से भी जाना जाता है।
4. **तख्त श्री पटना साहबि** बहिर की राजधानी पटना में स्थित है। गुरु गोबदि सहि जी का जन्म वर्ष 1666 में यहीं हुआ था और आनंदपुर साहबि जाने से पहले अपना बचपन उन्होंने यहीं बतियाया था।
5. **तख्त श्री हजूर साहबि** महाराष्ट्र के नांदेड़ में स्थित है।

- **ननकाना साहबि (पाकस्तान):** गुरु नानक देव जी का जन्म स्थान।
- **गुरुद्वारा दरबार साहबि (करतारपुर, पाकस्तान):** गुरु नानक देव जी ने अपने जीवन के अंतमि 18 वर्ष यहाँ बतियाए थे।

सखि साहित्य: आदिग्रंथ और दशम ग्रंथ

- आदिग्रंथ को सखियों द्वारा शाश्वत गुरु का दर्जा दिया गया है और इसी कारण इसे 'गुरु ग्रंथ साहबि' के नाम से जाना जाता है।
- दशम ग्रंथ के साहित्यिक कार्य और रचनाओं को लेकर सखि धर्म के अंदर कुछ संदेह और विवाद है।

नषिकर्ष

सखि अपने धर्म को पाँच महत्त्वपूर्ण घटनाक्रमों की परणितभानते हैं।

1. पहला घटनाक्रम गुरु नानक देव जी का उपदेश था जहाँ उन्होंने सतनाम पर ध्यान से मुक्तिका संदेश दिया।
2. दूसरा घटनाक्रम गुरु हरगोबदि जी द्वारा सखियों को शस्त्रों से सुसज्जित करना था।
3. तीसरा घटनाक्रम गुरु गोबदि सहि जी द्वारा खालसा की स्थापना जिसकी आचार सहिता का दीक्षा प्राप्त लोगों द्वारा पालन किया जाना है।
4. चौथा घटनाक्रम गुरु गोबदि सहि जी की मृत्यु पर आत्मा-स्वरूपी रहस्यमयी गुरु का अपने 10 मानवीय रूपों से गुरु ग्रंथ साहबि में प्रवेश करना है।
5. अंतिम घटनाक्रम 20वीं शताब्दी के आरंभ में संपन्न हुआ जब सखि धर्म में 'तत खालसा' के नेतृत्व में गहन सुधार किया गया।

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/sikhism>

